कक्षा-9

नुपूर

(नृत्य)

भाग-I

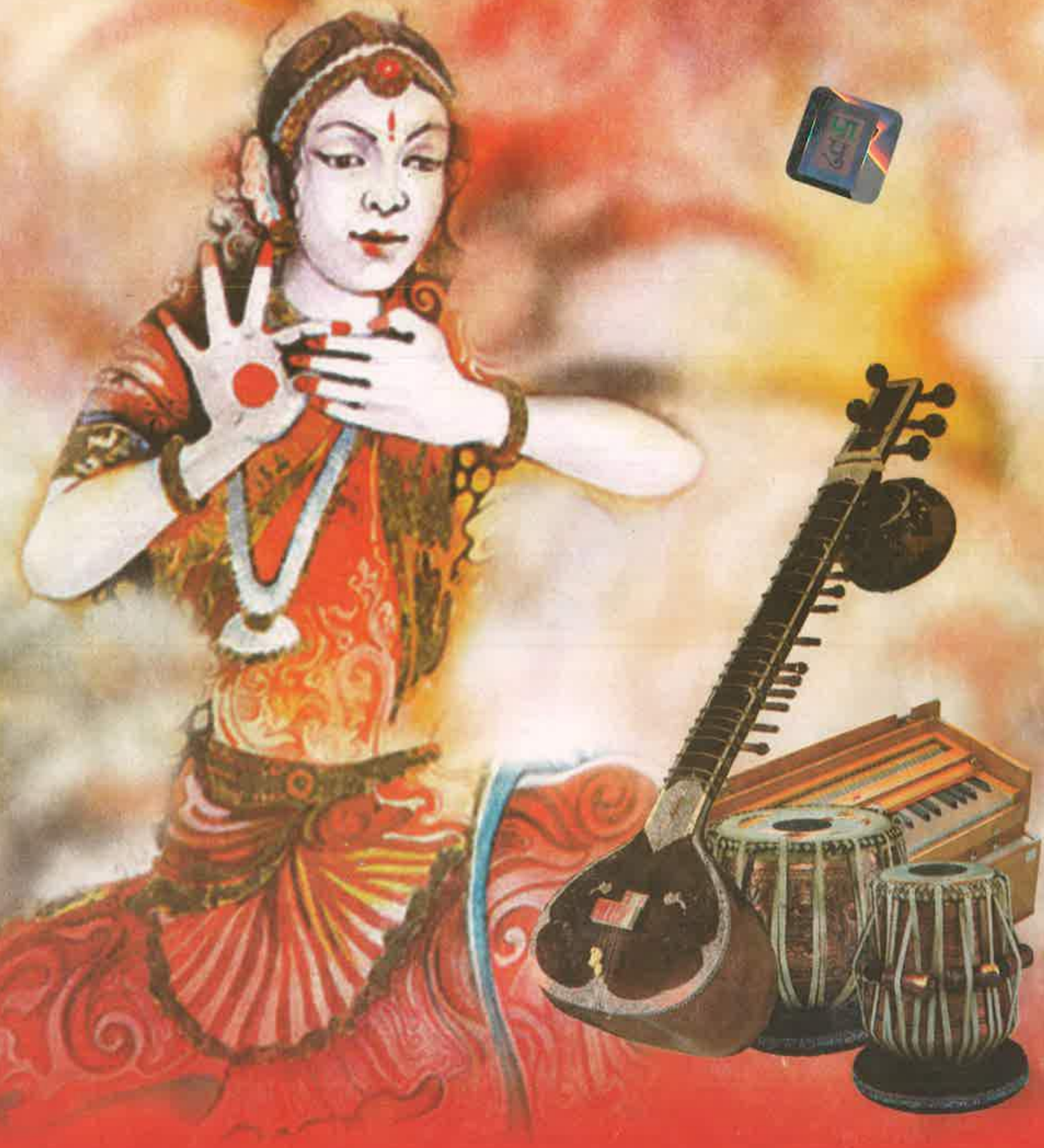

नुपूर

भाग–I

कक्षा 9 के लिए ऐच्छिक नृत्य की पाठ्यपुस्तक

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण : 2014

मूल्य : ₹ 19.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना - 800 001 द्वारा प्रकाशित तथा बब्लू बाईंडिंग हाउस, पटना कोल्ड स्टोरेज, पटना-800006 द्वारा 5000 प्रतियाँ मुद्रित ।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल 2013 से राज्य के कक्षा IX एव X हेतु ऐच्छिक विषयों का पाठ्यक्रम लागू किया गया है। इस संदर्भ में एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना द्वारा विकसित प्रस्तुत पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की जा रही है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार श्री जीतन राम मांझी, शिक्षामंत्री, श्री वृशिण पटेल एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री आर०के० महाजन के मार्गदर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार पटना के निदशक के भी हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया ।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके ।

दिलीप कुमार, आई०टी०एस०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०,

दिशा बोध

- श्री अमरजीत सिन्हा, प्रधान सचिव, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार, पटना।
- श्री राहुल सिंह, राज्य परियोजना निदेशक, बिहार माध्यमिक शिक्षा परिषद्, पटना।
- श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना।
- डॉ. सैयद अब्दुल मुईन, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना।
- डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर ।

लेखक समूह :

- डॉ. अर्चना चौधरी, उच्च विद्यालय, अमरपुरा, नौबतपुर, पटना।
- सुश्री लीना मिश्रा, राजकीय उर्दू मध्य विद्यालय, खानमिर्जा, महेन्द्रु, पटना।

समीक्षक :

- श्रीमती नीलम चौधरी (कथक नृत्यांगना), लोकायुक्त के उपसचिव, बिहार सरकार, पटना।

समन्वयक :

- डॉ. रीता राय, व्याख्याता, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना।

आमुख

ऐच्छिक विषय की इस पुस्तक के विकास क्रम में इस बात पर ध्यान दिया गया है कि बच्चों के सकूली जीवन के अनुभवों के साथ नृत्य को जोड़ते हुए बच्चों की आंतरिक वृत्तियों को विकसित एवं अभिव्यक्त करने अवसर प्रदान किया जाए। यह ज्ञानियों को ज्ञान प्रदान करती है, साधारण जनों को उपदेश देती है और अल्पज्ञों का मनोरंजन करती है।

प्रत्येक बच्चा अपने जीवन के रंगमंच का कुशल कलाकार होता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक हरेक पल वह नाचता ही तो रहता है। मनुष्य के जीवन की छत्रछाया में पलने वाली नृत्यकला मनुष्य जाति को हर प्रकार की शिक्षा देती है–धार्मिक शिक्षा, सांस्कृतिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा एवं सामाजिक शिक्षा। वैदिक काल से नृत्यकला आध्यात्मिक उन्नति के साथ मनोरंजन का साधन भी रही है जो भावनाएँ गायन और वादन द्वारा प्रस्तुत नहीं की जा सकतीं वे सब नृत्य के द्वारा पेश की जा सकती हैं।

नवम् वर्ग के बच्चों के मस्तिष्क का इतना विकास तो हो ही जाता है कि वह भारत के विभिन्न प्रांतों में प्रचलित नृत्य, शास्त्रीय और लोक नृत्य की पहलुओं को समझने के प्रयास में सक्षम बन सके। बच्चों को यह समझाने का प्रयास किया गया है कि शास्त्रीय नृत्य नियमों पर आधारित होता है। नृत्य के द्वारा मनोरंजन तो होता ही है, शरीर की शक्ति भी बढ़ती है। भारत में उत्सव, त्योहारों पर नृत्य के द्वारा उल्लास पूर्ण वातावरण बन जाता है। पशु-पक्षी भी अपने आनंद की भावना को प्रगट करने के लिए नृत्य करते देखे जा सकते हैं। जैसे–मोर, कबूतर इत्यादि। इस पुस्तक में भारतीय शास्त्रीय नृत्य का प्रकार, ताल परिचय एवं नृत्य में योगदान करने वाले महान हस्तियों की जीवनी को बड़े ही सटीक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

इस पुस्तक का विकास निर्णयानुसार किया गया है। संभव है कहीं-कहीं कुछ त्रुटियाँ रह गयी हों, जिन्हें विद्वत्जनों के सुझाव से अगले संस्करण में सुधारने का प्रयास किया जायेगा।

हम विशेष रूप से विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग एवं संकाय सदस्य, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तक के विकास में शामिल विद्वत्जनों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिनके मार्गदर्शन में इस महती कार्य को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराया गया। हम उन कर्मचारियों को धन्यवाद देते हैं जिनकी एकनिष्ठ सक्रियता ने कार्य को सुगम बना दिया।

हसन वारिस
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार
पटना-800 006

वर्ग नवम् : (नृत्य का पाठ्यक्रम)

(कथक / भरतनाट्यम / ओडिसी / मणिपुरी)

1. भारतीय शास्त्रीय नृत्य का ज्ञान-प्रकार एवं परिचय
2. पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान।
3. भारतीय लोक नृत्य का वर्णन।
4. ताल परिचय-तीनताल, दादरा, कहरवा।
5. जीवन परिचय एवं योगदान-पंडित बिरजू महाराज / यामिनी कृष्णमूर्ति / केलुचरण महापात्रा।
6. शास्त्रीय नृत्यों को परम्परागत रूप से 10 मिनट तक प्रस्तुत करने का अभ्यास

वर्ग नवम् (Dance)

प्रकरण	उप प्रकरण	संसाधन	क्रियाशीलन
परिचय	1. भारतीय शास्त्रीय नृत्य का ज्ञान-प्रकार एवं परिचय	विभिन्न शास्त्रीय नृत्य की वेश-भूषा के साथ वर्णन करना।	शास्त्रीयनृत्य को पद संचालन एवं परिधान के अनुसार समझाना एवं परिचय देना।
परिभाषा	2. पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान– **कथक**-आमद, सलामी, तोड़ा, तिहाई, ताली, खाली, ताल, सम विभाग, ततकार। **भरतनाट्यम**-अडयू की परिभाषा अडयू के प्रकारों के पद संचालन का ज्ञान। **मणिपुरी**-लास्य, चाली, मुद्रा, अभिनय। **ओडिसी**-तांडव, लास्य, अभिनय, अभिनय के प्रकार मुद्रा चाली।		क्रियात्मक रूप से सभी शब्दों को नृत्य करके समझाना एवं अभ्यास करवाना।
	3. भारतीय लोक नृत्य का वर्णन-	लोक संगीत वाद्य यंत्र पहचानना।	
	4. तीनताल, दादरा, कहरवा तालों का पूर्ण परिचय।		सभी तालों को हाथ से ताली देकर ठाह, दून, चौगून मे अभ्यास करना।
जीवनी	5. यामिनी कृष्ण मूर्ति / केलु-चरण महापात्रा/पंडित बिरजू महाराज ।		नर्त्तकों की उपलब्धियों को बताना।

(शिक्षार्थी समूह, शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से किसी एक नृत्यशैली की शिक्षाग्रहण कर सकते हैं)

मूल्यांकन

विषय-नृत्य

परीक्षा : कुल – 100 अंक

सैद्धान्तिक – 30 अंक

व्यावहारिक : 70 अंक (10 + 10 + 50)

मूल्यांकन : (10) अंकों का विद्यालय स्तर पर दो बार मंच प्रदर्शन तथा (50) अंकों की व्यावहारिक परीक्षा तथा (30) अंकों की सैद्धान्तिक परीक्षा अधिगम प्रतिफल-शिक्षार्थी, संगीत, एवं नृत्य का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। सौन्दर्यबोध की भावनाओं का उनमें विकास होगा। विभिन्न सांस्कृतिक रूपों से शिक्षार्थियों का परिचय होगा। विभिन्नता में एकता की भावना का विकास होगा । राष्ट्रीय एकता का विकास होगा।

शिक्षक की भूमिका :

(1) शिक्षार्थियों द्वारा विभिन्न अवसरों पर सम्पादित किये जानेवाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपेक्षित सहयोग देना।

(2) शिक्षार्थियों में नेतृत्वकारी गुणों को बढ़ाना।

(3) संगीत कला को समाज तक पहुँचाने का प्रयास करना।

विषय-सूची

क्र०संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	पुस्तक का नाम - नुपूर, भाग -1	(i)
2.	निदेशक (माध्यमिक)	(iii)
3.	प्राक्कथन	(iii)
4.	दिशा बोध	(v)
5.	आमुख	(vii)
6.	वर्ग दशम् (नृत्य पाठ्यक्रम)	(viii)
7.	मूल्यांकन	(ix)
8.	विषय सूची	(x)
	विविध : (ज्ञान विस्तार हेतु)	
9.	भारतीय तथा पाश्चात्य नृत्य शैलियों का तुलनात्मक विवेचन	51-53
10.	प्रसिद्ध नृत्यकारों का भाव-भंगिमाओं में चित्र	54-61